डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 22-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

अथर्ववेद

'अथर्ववेद' का अर्थ है - अथर्वो का वेद। अर्थात अभिचार मंत्रों से संबंधित ज्ञान ।

प्रारंभ में 'अथर्वन' शब्द 'पुरोहित' का वाचक था। 'अथर्वन' संज्ञक ये पुरोहित अवेस्ता के अग्नि पूजकों के ही समान थे । आगे चलकर इन्हें ही अभिचार पुरोहित कहा जाने लगा । वस्तुतः, एक ओर तो ये अन्य पुरोहितों - जैसी क्रियाओं को करते थे और दूसरी ओर झाड़-फूंक करने वाले हो ओझाओं- जैसी क्रियाओं को भी करते थे। इस प्रकार इन में दोनों ही गुण थे।

'अथर्ववेद' का ही एक प्राचीन नाम 'अथर्वाङ्गिरस' भी है।अर्थात् अथर्वो का ज्ञान और अङ्गिराओं का ज्ञान । अथर्वा लोग और अङ्गिरा लोग -दोनों प्राय: समान ही थे । अथर्वो के मंत्र (अथर्वन्) रोग आदि के नाशक माने जाते हैं, और अङ्गिराओं के मंत्र शत्रुओं के और दुष्ट मायावियों के नाशक माने जाते हैं । इस प्रकार 'अथर्वाङ्गिरस' नाम उपर्युक्त दोनों ही प्रकार की अभिचारिक विधियों का संकेत करता है। 'अथर्ववेद' इस अथर्वाङ्गिरस' नाम का ही संक्षिप्त रूप है।

अथर्ववेद की शाखाएँ

अथर्ववेद की नौ शाखाओं में से आजकल केवल दो ही शाखाएं उपलब्ध होती है-

१. शौनक शाखा
२. पैप्लाद शाखा

शौनकीय शाखा की संहिता में :- 20 काण्ड , 731 सूक्त, 6000 मंत्र है (निश्चित संख्या में 5987 मंत्र है)। इन मंत्रों में से 1200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। अथर्ववेद मे दो प्रकार के मंत्र हैं:-

१. अथर्वो के मंत्र- इन मंत्रों का विनियोग, ग्राम अथवा परिवार में शांति की स्थापना के लिए, शत्रुओं से संधि आदि के लिए, यात्राओं में सुरक्षा के लिए और साथ ही दीर्घायु, स्वास्थ्य और धन -वैभव आदि की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

२. अङ्गिराओं के मंत्र - अंगिराओं के मंत्रों का विनियोग, रोगों को नष्ट करने के लिए, हिंसक पशुओं को दूर रखने के लिए और पिशाच, जादूगर आदि दुष्ट और मायावी शक्ति को नष्ट करने या दूर भगाने के लिए किया जाता है।

इस प्रकार अथर्ववेद में उपचार मंत्र भी है और अभिचार मंत्र भी है । अर्थात् अथर्ववेद के कुछ मंत्रों का सम्बन्ध संवर्धन आदि से है । जैसे- पुत्र जन्म, विवाह, राज्याभिषेक आदि अवसरों पर अथर्ववेद के मंत्रों का पाठ किया जाता है। इसके साथ ही अथर्ववेद में कुछ ऐसे मंत्र भी हैं जिनका प्रयोग कोढ़, राजयक्ष्मा, खांसी और गंजापन, दुर्बलता आदि के उपचार के लिए भी किया जाता है। यहाँ तक कि घाव को भरने, सर्पदंश के विष को दूर करने और पागलपन को ठीक करने के मंत्र भी अथर्ववेद में पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं । भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति- आयुर्वेद के बीज इसी वेद में उपलब्ध होते हैं। अथर्ववेद के कुछ अति प्रसिद्ध सूक्तों का नाम निर्देश करना यहाँ उपयोगी होता है। ऐसे कुछ सूक्त ये हैं :-

१. भैषज्यानि सूक्त
२. आयुष् सूक्त
३. पौष्टिक सूक्त
४. मृगार सूक्त
५. कौशिक सूक्त
६. राजकर्माणि सूक्त
७. यज्ञपरक सूक्त
८. अन्त्येष्टि सूक्त, और
९. रोहित सूक्त आदि ।

इनके साथ ही, अथर्ववेद में कुछ दार्शनिक सूक्त- सृष्टि-उत्पत्ति और पृथ्वी सूक्त आदि भी संकलित हैं।

अथर्ववेद के काण्ड और उनका विषय

अथर्ववेद में विषय का विभाजन 20 कांडों में हुआ है। काडों के अनुसार अथर्ववेद की विषय- सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है :-

1-7 काण्ड तक छोटे-छोटे और भिन्न -भिन्न विषयों के सूक्त हैं । 8-12 काण्ड तक बड़े- बड़े सूक्त हैं । 12. कांड के आरंभ में प्रसिद्ध पृथ्वी सूक्त मिलता है ।

13.वें काण्ड में अध्यात्म-विषयक सूक्त है ।

14वें काण्ड के सभी सूक्त विवाह विषयक है।

15वें और 16वें काण्ड के मंत्र पद्यात्मक न होकर गद्यात्मक है।

15वें काण्ड के मंत्र व्रात्यों के यज्ञों से संबंध रखते हैं तथा 16वें काण्ड के मंत्र दु:स्वप्नों के विनाशक माने गए हैं ।

17वें काण्ड में, अभ्युदय की प्रार्थना वाले मंत्र है ।

18वें काण्ड में पितृमेध- संबंधी मंत्र है। इस कांड को श्राद्ध -काण्ड भी कहा जाता है । अंत्येष्टि संबंधी मंत्र भी इसी काण्ड में है।

19वें और 20वें काण्ड को खिल-काण्ड कहा जाता है। 19वें काण्ड में भैषज्य, राष्ट्रवृद्धि और अध्यात्म से संबंधित सूक्त है । 20वें काण्ड में 'सौमयाग' के सूक्त है जो ऋग्वेद से लिए गए हैं ।